

83 - सूरह मुतफ़िफ़ीन^[1]

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरह मुतफ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफ़िफ़ीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने-तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लियीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत 29 से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुखी न हों आज वह तुम पर हँस रहे हैं कल तुम उन पर हँसोगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश है डंडी मारने वालों का।
2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।
3. और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।
4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوَّزَوْهُمْ يَخْسِرُونَ

أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ

- 1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक खराबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़िफ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

5. एक भीषण दिन के लिये।
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।^[1]
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।
8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है
11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते हैं।
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैं: पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मी के कारण लोहमल लग गया है।
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
16. फिर वे नरक में जायेंगे।

- لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝
وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝
كِتَابٌ مَرْفُومٌ ۝
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝
الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بَيُّومَ الدِّينِ ۝
وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝
إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝
كَلَّا بَلْ عَصَرَان عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ نَآكَرُوا كَيْدَهُنَّ ۝
كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُورُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝

1 (1-6) इस सुरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।^[1]
18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लियीन" में है।
19. और तुम क्या जानो कि "इल्लियीन" क्या है?
20. एक अंकित पुस्तक है।
21. जिस के पास समीपवर्ती (फ़रिश्ते) उपस्थित रहते हैं।
22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।
23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।
24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।
25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।
26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।
27. उस में तसनीम मिली होगी।

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُونَ ۝

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْإِبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝

يَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ بِوَيْحِ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِنَّ الْإِبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

عَلَى الْأَرْسَالِكِ يَنْظُرُونَ ۝

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْتُومٍ ۝

خَمْرٌ مِّنْ لَّدُنْكَ فَلَيْتَنَافَسَ الْمُتَنَفِسُونَ ۝

وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝

1 (7-17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।

"सिज्जीन" से अभिप्राय: एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुशिरकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमल: पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप वर्ती पियेंगे।^[1] عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝
29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे। إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝
30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे। وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝
31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे। وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝
32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग हैं। وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝
33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे। وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۝
34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरोँ पर हंस रहे हैं। فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝
35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं। عَلَى الْأَرْكَانِ يُنظَرُونَ ۝
36. क्या काफ़िरोँ (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया? ^[2] مَلْئُوكَ الْكُفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

1 (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित हैं और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लिय्यीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ति फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।

2 (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वयं इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।